दिव्य-भव्य-डिजिटल
एकता का महाकुम्भ

सनातन गर्व महाकुम्भ पर्व

कला, संस्कृति एवं परम्परा का संगम

महाकुम्भ 2025 प्रयागराज
13 जनवरी से 26 फरवरी

उत्तर प्रदेश संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

महाकुम्भ प्रयागराज - 2025

महाकुम्भ

आस्था, विश्वास, सौहार्द एवं संस्कृतियों के मिलन तथा विभिन्न मतों-अभिमतों-मतान्तरों के व्यावहारिक मंथन का पर्व है कुम्भ। इस मंथन से निकलने वाला ज्ञान-अमृत ही कुम्भ-पर्व का प्रसाद है। कुम्भ वस्तुतः ज्ञान और चेतना के परस्पर मंथन का वह आयाम है, जो आदि काल से ही हिन्दू धर्मावलम्बियों की जागृत चेतना को बिना किसी आमन्त्रण के आकर्षित करता आ रहा है। वास्तव में कुम्भ हमारी सभ्यता व प्रकृति का संगम है, आत्म जागृति का प्रतीक है, यह मानवता का अनंत प्रवाह तथा ऊर्जा का वह स्रोत है, जो मानव जाति को पाप-पुण्य और प्रकाश का एहसास कराता है।

कुम्भ का इतिहास

वस्तुतः कुम्भ आयोजन की परम्परा हजारों वर्ष प्राचीन है। आरम्भिक इतिहास के पन्नों में भले ही कुम्भ के विषय में कोई प्रामाणिक जानकारी उपलब्ध न हो, परन्तु देश की धर्मपरायण जनता के हृदय में इसकी छवि इतनी गहराई तक अंकित है कि लाखों लोग स्वतः कुम्भ पर्व पर एकत्र हो जाते हैं। कुम्भ पर्व किसी इतिहास निर्माण के दृष्टिकोण से प्रारम्भ नहीं हुआ, अपितु इसका इतिहास समय द्वारा ही स्थापित होता चला गया। वैसे भी धार्मिक परम्पराएं हमेशा आस्था एवं विश्वास के आधार पर टिकती हैं, न कि इतिहास पर। यद्यपि ऐतिहासिक दृष्टि से कुम्भ का प्राचीनतम लिखित वर्णन सम्राट हर्षवर्धन के समय से प्राप्त होता है। सम्राट हर्ष स्वयं प्रयागराज

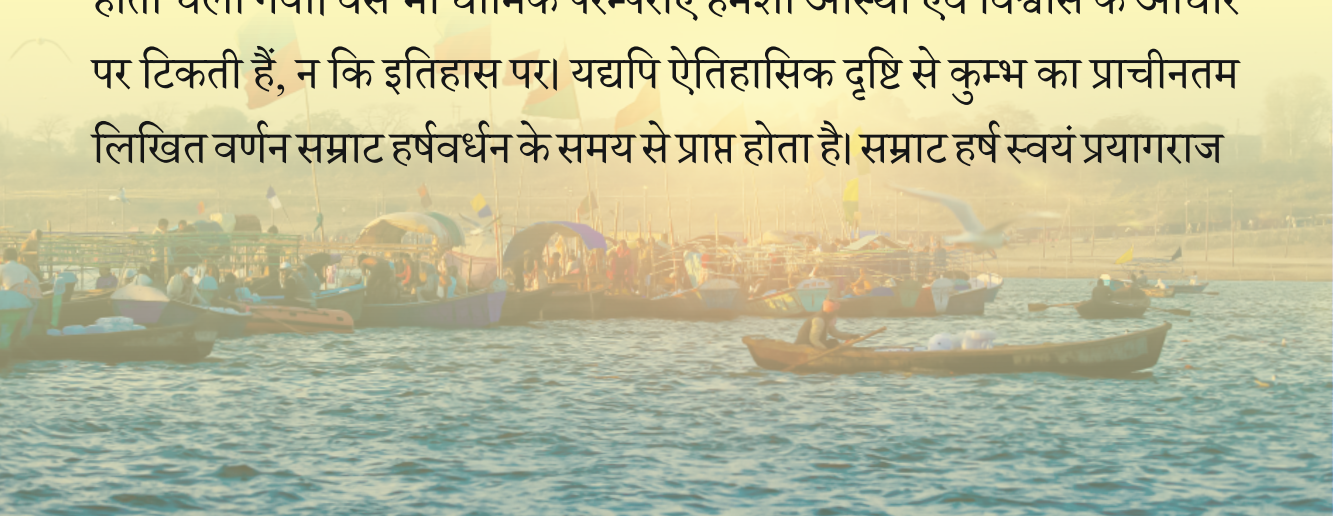

में आयोजित कुम्भ में भाग लिया करते थे, जिसका वर्णन ह्वेनसांग ने भी अपने यात्रा वृतान्त में किया है। ऐसी मान्यता है कि 8वीं शती ई० के महान दार्शनिक शंकराचार्य ने कुम्भ के आयोजन को व्यवस्थित रूप प्रदान किया था।

मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर है 'कुम्भ'

- यूनेस्को ने 2017 में कुंभ को ''मानवता की अमूर्त सांस्कृतिक धरोहर'' के रूप में मान्यता दी। यह भारतीय परंपराओं की समृद्धि को दर्शाता है।
- मानव मात्र का कल्याण व 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना ही कुम्भ का मूल संदेश व वैश्विक पटल पर शांति और सामंजस्य का प्रतीक है।

समुद्र-मंथन और कुम्भ

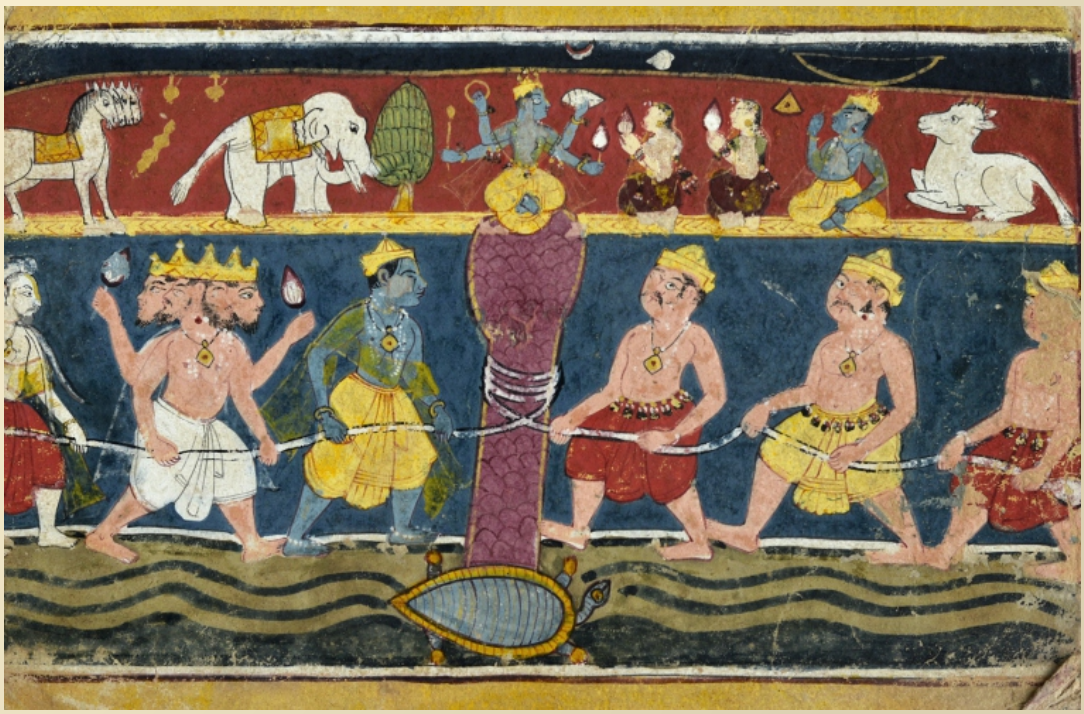

कुम्भ का शाब्दिक अर्थ है 'कलश'। कुम्भ के परिप्रेक्ष्य में 'कलश' का सम्बन्ध उस अमृत कलश से है, जो समुद्र मंथन से प्राप्त हुआ था। भारतीय शास्त्रों में समुद्र मंथन की कथा का विशद वर्णन प्राप्त होता है, जिसके अनुसार अमृत की प्राप्ति हेतु देवताओं तथा असुरों द्वारा समुद्र मंथन किया गया। समुद्र मंथन हेतु मंदराचल पर्वत को मथनी तथा वासुकि नाग को नेति बनाया गया। मंदराचल पर्वत को समुद्र में समाने से बचाने के लिए स्वयं भगवान विष्णु ने कच्छप अवतार लेकर मंदराचल को अपनी पीठ पर धारण किया। वासुकि के सिर की ओर असुरों और पूंछ की ओर देवताओं ने पकड़ कर समुद्र मंथन किया था।

समुद्र-मंथन से चौदह रत्नों की प्राप्ति

लक्ष्मीः कौस्तुभ पारिजातक सुरा धन्वन्तरिश्चन्द्रमाः। गावः कामदुहा सुरेश्वरगजो रम्भादिदेवांगनाः।
अश्वः सप्तमुखो विषं हरिधनुः शंखोमृतं चाम्बुधेः। रत्नानीह चतुर्दश प्रतिदिनं कुर्यात्सदा मंगलम् ।।

- अर्थात समुद्र मंथन से कालकूट विष, कामधेनु गाय, उच्चैःश्रवा घोड़ा, ऐरावत हाथी, कौस्तुभ मणि, कल्पवृक्ष, अप्सरा रम्भा, देवी लक्ष्मी, वारूणी देवी, चन्द्रमा, पारिजात, पाञ्चजन्य शंख तथा तेरहवें व चौदहवें रत्न के रूप में अमृत कलश के साथ भगवान धनवन्तरि प्रकट हुए। अमृत को दीर्घ जीवन एवं अमरत्व का प्रतीक माना जाता है।

अमृत कलश से अमृत की बूंदों का छलकना

- अमरत्व की प्राप्ति हेतु देवताओं एवं असुरों में अमृत कलश पर अधिकार को लेकर हुए संघर्ष के समय हरिद्वार (उत्तराखण्ड), प्रयागराज (उ०प्र०), उज्जैन (म०प्र०) एवं नासिक (महाराष्ट्र) में सुधा कुम्भ की बूंदें गिरीं, जिसके कारण इन स्थानों पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

कुम्भ का खगोलीय महत्व

• कुम्भ पर्व का मूल आधार पौराणिक आख्यानों के साथ-साथ खगोल विज्ञान भी है, क्योंकि ग्रहों की विशेष स्थितियां ही कुम्भ पर्व के आयोजन का काल व समय निर्धारित करती हैं।

• कुम्भ एक ऐसा विशेष पर्व है, जिसमें दिवस एवं ग्रह का अत्यंत पवित्र संयोग होता है। कुम्भ पर्व का योग सूर्य, चंद्रमा, गुरू और शनि की स्थिति के आधार पर निर्धारित होता है।

• बृहस्पति के कुम्भ राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर हरिद्वार में,

• बृहस्पति एवं सूर्य के सिंह राशि में प्रविष्ट होने पर नासिक में,

• बृहस्पति के सिंह राशि में तथा सूर्य के मेष राशि में प्रविष्ट होने पर उज्जैन में,

• बृहस्पति के मेष राशि में प्रविष्ट होने तथा सूर्य और चन्द्र के मकर राशि में आने पर प्रयागराज में त्रिवेणी संगम तट पर कुम्भ पर्व का आयोजन होता है।

अर्ध कुम्भ, कुम्भ एवं महाकुंभ

• अर्ध कुंभ हर छः साल में हरिद्वार और प्रयागराज में होता है।

• कुम्भ का आयोजन हर 12 साल में चार बार क्रमिक रूप से गंगा पर हरिद्वार में, शिप्रा पर उज्जैन में, गोदावरी पर नासिक और प्रयागराज में गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम पर होता है।

• महाकुंभ एक दुर्लभ और भव्य आयोजन है, जो हर 144 साल में होता है।

प्रयागराज में महाकुम्भ

प्रयागराज में 'कुम्भ' की ध्वनि सुनते ही गंगा, यमुना एवं सरस्वती के पावन संगम स्थल का दृश्य मानस पटल पर स्वयं ही उभर आता है। श्री अखाड़ों के शाही स्नान से लेकर साधु-सन्तों के पंडालों में धार्मिक अनुष्ठान व मंत्रोच्चार, लोक कल्याणकारी प्रवचन व उपदेश की ध्वनि से समूचा कुम्भ परिसर गुंजायमान रहता है। निरन्तर चलने वाले सांस्कृतिक आयोजनों तथा देश-विदेश की संस्कृतियों के दर्शन प्रयागराज के कुम्भ में सहज ही प्राप्त होते हैं।

विशेषताएं

- प्रयागराज का कुम्भ, कल्पवास की परम्परा वाला इकलौता कुम्भ है। मत्स्य पुराण में महर्षि मार्कण्डेय युधिष्ठिर से कहते हैं कि प्रयाग समस्त देवताओं द्वारा विशेषतया रक्षित है, जहाँ एक माह तक प्रवास करने, पूर्ण परहेज रखने, अखण्ड ब्रह्मचर्य व्रत धारण करने तथा अपने देवताओं व पितरों का तर्पण करने से समस्त मनोकामनायें पूर्ण होती है।
- पौराणिक आख्यानों के अनुसार ब्रह्माण्ड की रचना से पहले ब्रह्मा जी ने यहीं अश्वमेघ यज्ञ किया था। दशाश्वमेघ घाट और ब्रह्मेश्वर मंदिर इस यज्ञ के प्रतीक स्वरूप माने जाते हैं।

- प्रयागराज के कुम्भ की महिमा का वर्णन मत्स्य पुराण में प्राप्त होता है।
- प्रयागराज में भारत की तीन पवित्र नदियों गंगा, यमुना और सरस्वती के संगम स्थल को 'त्रिवेणी' कहा जाता है।
- प्रयागराज की महिमा व पवित्रता के कारण ही इसे तीर्थराज के नाम से भी जाना जाता है।
- नदियों के साथ-साथ यहां ज्ञान की त्रिवेणी भी अनवरत प्रवाहित होती है। सदियों से महाकुम्भ के दौरान प्रयागराज की धरा ज्ञान- विज्ञान, अध्यात्म-ज्योतिष आदि प्राच्य विद्याओं की चर्चा, गोष्ठियों एवं प्रवचन के माध्यम से भारतीय संस्कृति को पल्लवित करती आई है।
- प्रयाग महात्म्य के अनुसार अनादिकाल से प्रयागराज ज्ञान और भक्ति का सर्वश्रेष्ठ स्थान रहा है। प्रयाग में त्रिवेणी के तट पर अनेकानेक सम्प्रदायों, संस्कृतियों एवं ज्ञान, वैराग्य और भक्ति का भी अद्भुत संगम विद्यमान है।

उत्तर प्रदेश संग्रहालय निदेशालय
लखनऊ

प्रदर्शनी के मुख्य आकर्षण

- **ए.आर. और वी.आर. (Augmented Reality और Virtual Reality):** इन तकनीकों के माध्यम से हमारे अतिथि संग्रहालय के ऐतिहासिक और सांस्कृतिक पहलुओं का वास्तविक अनुभव कर पाएंगे।
- **3D स्कैन की गई छवियां:** जिनसे आप प्राचीन धरोहरों की बारीकियों को नजदीक से देख सकेंगे।
- **डॉक्यूमेंट्री और डिजिटल साइनेज:** जो हमारे संग्रहालयों की कहानियां और ऐतिहासिक धरोहरों का महत्व साझा करेंगे।
- **ए.आई. मित्र (AI Mitra):** एक रोबोटिक व्यक्तिगत गाइड, जो आगंतुको को मार्गदर्शन देगा और उनकी जिज्ञासाओं का उत्तर देगा।
- **ऑगमेंटेड रियलिटी ऐप (Augmented Reality App):** जो आपके स्मार्टफोन को एक जीवंत संग्रहालय अनुभव में बदल देगा।
- **एल. ई. डी. बैकलिट आधारित पिक्चर शोकेस:** यह तकनीक हमारे ऐतिहासिक धरोहरों और कलाकृतियों को अद्वितीय तरीके से प्रदर्शित करेगी, जिससे वे और भी आकर्षक और जीवंत लगेंगी
- **उत्कृष्ट कलाकृतियों की अनुकृतियां:** प्रदर्शनी में राज्य संग्रहालय, लखनऊ की उत्कृष्ट कलाकृतियों की अनुकृतियों को भी प्रदर्शित किया गया है।

स्नान की प्रमुख तिथियां

- 13 जनवरी, 2025 पौष पूर्णिमा का स्नान
- 14 जनवरी, 2025 - मकर संक्रांति- प्रथम शाही स्नान
- 29 जनवरी, 2025 मौनी अमावस्या - द्वितीय शाही स्नान
- 03 फरवरी, 2025 बसंत पंचमी-तृतीय शाही स्नान
- 12 फरवरी, 2025 माघी पूर्णिमा का स्नान
- 26 फरवरी, 2025 महाशिवरात्रि का स्नान

Scan QR Code
For AR app

Scan QR Code
For Location

उत्तर प्रदेश संग्रहालय निदेशालय, लखनऊ

संस्कृति विभाग, उत्तर प्रदेश

ईमेल: museumdirectorate@gmail.com

संपर्क: 0522-2205142